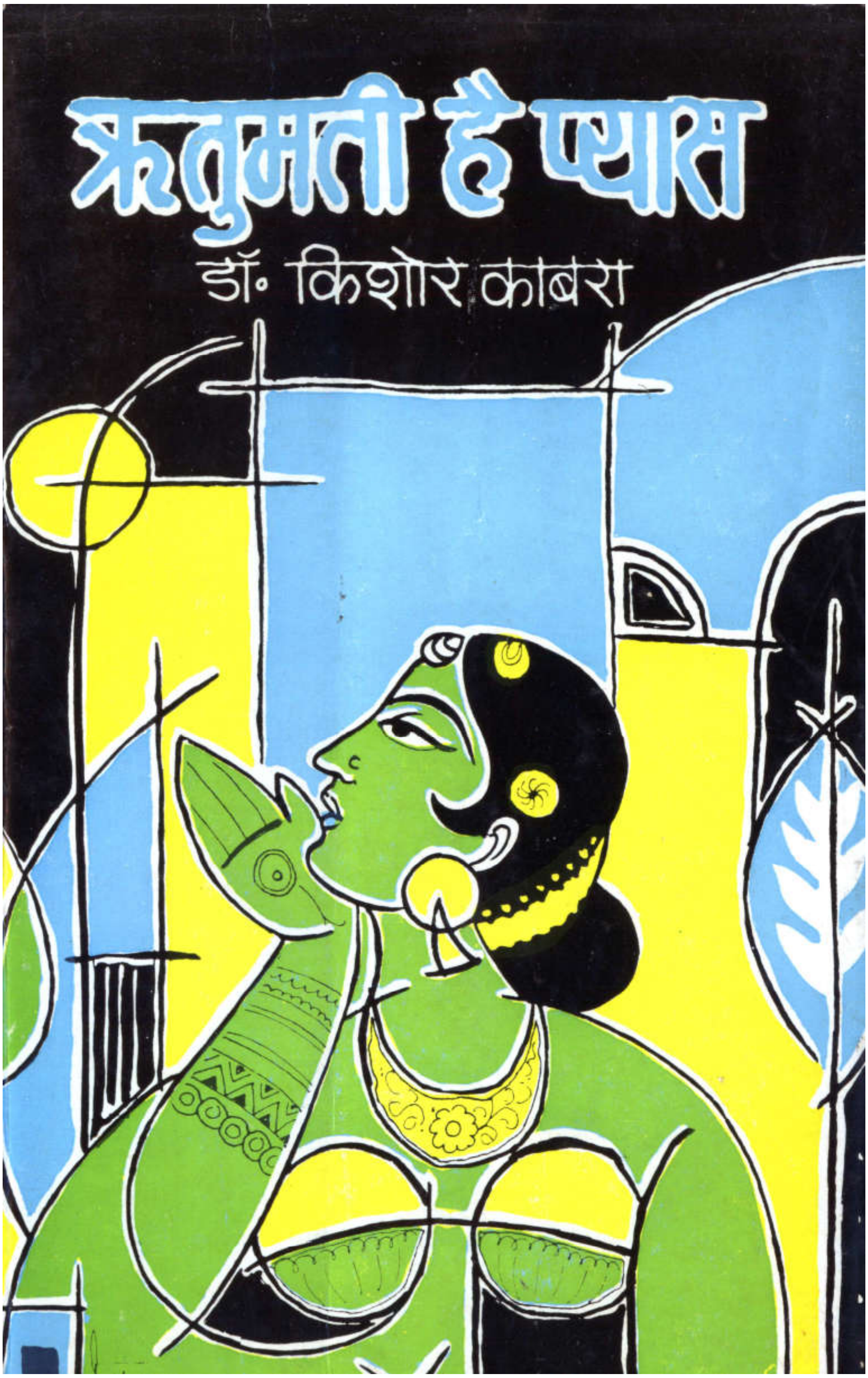
ऋतुमती है प्यास
डॉ॰ किशोर काबरा

ऋतुमती है प्यास

(गीत-संग्रह)

किशोर काबरा

प्रकाशक : सेतु प्रकाशन, 9, माधव पार्क II, वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद 382418. M. – 9427622862 के द्वारा प्रकाशित Email : vijay.tiwari1998@gmail.com/© डॉ. किशोर काबरा, द्वितीय संस्करण : 2018 मूल्य : 200 रुपये/ श्री रामानन्द ऑफसेट अर्बुदानगर, ओढ़व, अहमदाबाद-382415. M. : 9106936808

RITUMATI HAI PYAS (Hindi Lyric Poems)

By KISHORE KABRA.

Rs. 200

सेतु प्रकाशन

अहमदाबाद

गीतों का क्रम

सपनों की गंध	6
टूट गए धूप के खिलौने	7
रात कोई गीत दस्तक दे रहा था	8
आओ, एक सर्जन दें	9
इधर-उधर बिखर गए प्रश्न	10
घाटी में गर्भवती ध्वनियों के गाँव	11
ताड़ हुई तिल की परछाइयाँ	12
बरगद में उलझ गया काँव	13
करौंदे-सा गरम मौसम	14
रतनारे दिन	16
बाँसों का जंगल	17
निंदिया के पाँव जले	18
खोजता है चाँद	19
रंगों के सिरहाने बैठी है धूप	20
सूरज के पाँव	21
नाच उठा चुनरी पर छपा हुआ मोर	22
अलसी का अलसाया पोर-पोर	23
बादल बह गया है	24
भाग रही पूरब से रात	25

ऋतु को रोमांच हुआ 26
गर्भवती छाँव 27
सुधियों के गाँव 28
दरक गया पोखर-सा मन 29
स्वस्थ शिशु की आँख-सा आकाश 30
खलिहानों पर यौवन हुआ सवार 31
माँग जली टेसू की 33
महकते बादल गगन की डाल पर 35
बूँद क्या टपकी 36
फूल चंपा के 37
पात-पात नूतन अनुबंध 38
मीठा दर्द सीकर आ गई है ठण्ड 39
नीम के पत्ते 40
पत्ते हैं तीन-तीन ढाक के 41
तुम कछार पर ठिठक गए उधर 42
शायद मूख चूमा है... 43
कुहरे में डूब गया गाँव का सवेरा 44
खुशबू के हस्ताक्षर 46
बड़ी थी उन दिनों हममें खराबी 48
गगन के चू पड़े मोती 49
अरे माझी ! 51
सो गए ये गाँव 52
आँख की छत 53
दूधिया प्रात 54
तुम बरसते रहे 55
डूबते शहर, डूबते गाँव 56
आज पनघट हर अधर के पास आया 57
मिट्टी का कर्ज़ 59
अब कुछ मन करता है 61
देना हो तो दो मुझको पूरी परिभाषा 63
धूमिल साँझ 64
हड्डियों को कुछ सुनहरा नाम दे दूँ 67

चंदनी छंद	69
ज़िन्दगी से कफ़न सस्ते	70
चरण-रेख	72
विद्रोही स्वर	78
कफ़न के पैबन्ध	74
खण्डहर में उल्लुओं की है सभा	76
मेरी दुनिया कहाँ छिपी है ?	77
सुना है	79
तो तेरे साथ चलूँ	80

सपनों की गंध

डूब गया कलरव में दिन,
भीग गई शबनम से रात ।

स्याही से लिपे-पुते आँगन में बिखर गया
टिमटिम का शोर ।
चाँदी से बँधी हुई नौका बह आई है,
पुरवा की ओर ।
आह, चुभे पछुवा के पिन,
सिहर गया पीपल का पात ।

अलसाई निंदिया के सिरहाने बैठ गई,
सपनों की गंध ।
लोरी सुन जाग गए ।
प्यासे मन प्राणों के सोए अनुबंध ।
जाग रही तारे गिन-गिन
पश्चिम में सूरज की बात ।

कोयल की कूक पहन चकवे **की पीर** उठी
नदिया के पार ।
बरगद की छाया में
चुपके से आ बैठे चुम्बन दो-चार ।
बचपन के भोले पल-छिन
खा बैठे यौवन से मात ।

◈

टूट गए धूप के खिलौने

आकाशी झील के किनारे
बैठे बदराए बनपाँखी ।
सतरंगी गदराई छत से
बूँद-बूँद बिखरी मधुमाखी ।

निकल पड़े छोड़ घर-दुवारे,
कजरारे पागल बनजारे ।
आकाशी झील के किनारे ।

टूट गए धूप के खिलौने
निमिया की छाया के नीचे ।
अंकुर दो पत्तों को थामे
सोया है पलकों को मीचे ।

तैर गए किरण के इशारे,
डूब गए चाँद और सितारे ।
आकाशी झील के किनारे ।

उठे-गिरे आँचल में गुमसुम
दुबक रही बिजली की हँसुली ।
अलकों की चौखट को थामे
सिसक रही माथे की टिकुली ।

रुके भला कब तक जलधारे,
काजर की कोर के सहारे ।
आकाशी झील के किनारे ।

◈

रात कोई गीत दस्तक दे रहा था

मैं हवाओं के भरोसे चुप रहा,
पर
रात कोई गीत दस्तक दे रहा था ।

द्वार की चौखट पकड़कर
सिसकता कुहराम
लिखकर रख गया है एक सन्नाटा
अँधेरे पर बिना पूछे किसी का नाम ।
मैं गवाहों के भरोसे चुप रहा,
पर
रात कोई एक पुस्तक दे रहा था ।

चू पड़ा निश्वास
क्षण की डाल से चुपचाप,
पहुँचे नम पँखुरियों तक किसी बीमार मौसम के
सुलगते हाथ अपने आप ।
मैं दवाओं के भरोसे चुप रहा,
पर
रात कोई एक मस्तक दे रहा था ।

◈

आओ, एक सर्जन दें

कब तक यों सहलाएँ
सूरज के नाम को ?
आओ, एक सिहरन दें सपनों की शाम को ।

सागर तक फैल रहे
लहरों के पंख उधर ।
तट पर पछताते हैं सीपी और शंख इधर ।
कब तक यों दुहराएँ
झूठे परिणाम को ?
आओ, एक अर्पण दें अल्हड़ अभिराम को ।

कलकल में दुबक रहीं
पीढ़ी की धाराएँ ।
तारों को निगल रहीं किरणों की काराएँ ।
कब तक यों गहराएँ
जड़ता के याम को ?
आओ, एक गुंजन दें कल के कुहराम को ।

स्वेद बिन्दु सरे आम,
आँसू पर ताले हैं ।
पुष्पों के कानों में मकड़ी के जाले हैं ।
कब तक यों अँकुराएँ,
क्षण के विश्राम को ?
आओ, एक सर्जन दें श्रम के संग्राम को ।

इधर-उधर बिखरे गए प्रश्न

उत्तर से यों चली बयार,
इधर-उधर बिखरे गए प्रश्न ।

तैर गए तिनकों-से मेघ,
डूब गई चाँद की किरण ।
काजल के थामकर दुवार,
रात-रात जागते हिरण ।
भीग गए कलियों के प्राण,
सिहर गई निमिया की देह ।

मधुबन की गलियों के बीच
राधा को छोड़ गए कृष्ण ।

उखड़ गए नौका के पाँव,
अट्टहास करता है ज्वार ।
लहरों पर बुदबुद-सी साँस,
जाती है बहकर उस पार ।
तट के सब टूट गए बंध,
पनघट पर जलती है आग ।

अधझुलसे सपनों को घेर,
मुर्दे सब मना रहे जश्न ।

◈

घाटी में गर्भवती ध्वनियों के गाँव

शब्दों का कद कितना छोटा है ?
फिर भी वे नाप रहे कब से वेदान्त

झरता है बादल से नीला आकाश
पेड़ों की अंजुरि से रिसती है धूप ।
सूरज की भाषा को कौन पढ़े ?
सूर्यमुखी उपवन में लिखता एकान्त ।

लोकगीत ओढ़े शरमाते हैं खेत,
तारों से गुपचुप बतियाते खलिहान ।
मौसम के कानों में पहनाकर एक बात
लौटा है परदेशी प्रान्त ।

काँसों के वन में है यादों की गंध ।
घाटी में गर्भवती ध्वनियों के गाँव ।
जोहड़ में फेंक मरी मछली को
काँटे में फाँस रहा तट का विश्रान्त ।

ताड़ हुई तिल की परछाइयाँ

ठहर गए क्षण के सन्दर्भ,
ठिठक गई आँख की इकाइयाँ ।

पश्चिम का आदिम अहसास,
लील गया पुरवा के बदराए शंख ।
सपनीले नीड़ों की आस,
कुतर गई पंखी के विस्फारित पंख ।
ताड़ हुई तिल की परछाइयाँ ।

मरुथल का शंकित बिखराव,
उग आया मौन पहन शीशे के पाँव ।
पंक्तिबद्ध खोखले पड़ाव,
कोलाहल ओढ़ चले होरी के गाँव ।
पर्वत से बतियाती खाइयाँ ।

टुकड़ों में बँटी-बँटी बात
संशय बन चमक रही स्वीकृति के बीच ।
दुहराती बैरन बरसात
झिंगुराए बरगद की झंकृति के बीच ।
आँसू से भीगी चौपाइयाँ ।

◈

बरगद में उलझ गया काँव

बिखर गया पँखुरी-सा दिन,
फूल गई सेमल-सी रात ।
पूरब में अँकुराया चाँद,
जाग गई सपनों की माँद ।
आ धमका कमरे के बीच,
अँधियारा खिड़की को फाँद ।
होंठों पर आ बैठा मौन,
बन्द हुई सूरज की बात ।

अभिलाषा ढूँढ़ रही ठाँव,
आँसू के फिसल गए पाँव ।
पलकों पर आ बैठी ऊँघ,
बरगद में उलझ गया काँव ।
निंदिया के घर आई आज,
तारों की झिलमिल बारात ।

फुनगी पर बैठ गया छंद,
कलियों के द्वार हुए बन्द ।
पछुआ के हाथों को थाम,
डोल रहा पागल मकरंद ।
सिमट गई निमिया की देह,
सिहर गया पीपल का पात ।

◈

करौंदे-सा गरम मौसम

गरम मौसम ! गरम मौसम !

पाँव जलते हैं धरा के
और नभ के पंख ।
समय के तट पर पड़े हैं
सीप-घोंघे-शंख ।
ऋतु के पाँव में उभरा फफोले-सा गरम मौसम,
ज़हर के गाँव में ठहरा सँपोले-सा गरम मौसम ।

लू पहन आई दुपहरी,
उमस ओढ़े साँझ ।
रात उतरी साथ में ले-
ढोल-झालर-झाँझ ।
मन की रेत पर सोया घरौंदे-सा गरम मौसम,
किसी ने बाग में बोया करौंदे-सा गरम मौसम ।

चू रहा टपटप पसीना,
चिपचिपाते अंग ।
रंग पोखर के उड़े ।
बादल हुए बदरंग ।
क्षण की शाख पर अटका हिंड़ोले-सा गरम मौसम ।
किसी की आँख से छिटका बिनौले-सा गरम मौसम ।

झर गई सरसों सुहानी,
कट गया है धान ।
एक सन्नाटा पहनकर,
रुक गया खलिहान ।
तन में तीर बन जलता सुरालय-सा गरम मौसम,
नयन में नीर बन गलता हिमालय-सा गरम मौसम ।

◈

रतनारे दिन

बीत गए, प्यारे रतनारे दिन बीत गए,
रीत गए, आँखों के खारे छिन रीत गए ।

लहरों के इंगित पर रुक गए किनारों के
रेतीले पाँव ।
चुक गए सिवाने पर मेरी अभिलाषा के
सपनीले गाँव ।
हारे पल, आँख के इशारे बन जीत गए ।

बरसों के प्यासे मन पियराई सरसों की
लूट रहे गंध ।
रोमांचित अलसी की अनब्याही कलियों के
टूट रहे बंध ।
पारे से बिखर-बिखर क्वाँरे मन-मीत गए ।

अरुणाए अधरों के मखमल-से चुम्बन ने
मोड़ दिया पाल ।
काजल की डोरी से बँधी-बँधी मछली ने
छोड़ दिया ताल ।
द्वारे पर बहरे हरकारे बिन गीत गए ।

◈

बाँसों का जंगल

साँय-साँय करता-सा, बाँसों का जंगल यह,
सासों का जंगल यह ।

निंदिया के कानों में सपनों को सुनता-सा,
आँखों के करघे पर आँसू को बुनता-सा ।
साँय-साँय करता-सा, बाँसों का जंगल यह,
सासों का जंगल यह ।

जब तक यह ठौर-ठौर झुरमुट में पलता है,
पनघट के सिरहाने मरघट-सा जलता है ।

जब तक यह छोर-छोर गाँठों को सीता है,
लँगड़ी बैसाखी बन सड्कों पर जीता है ।

लेकिन जब पौर-पौर चुम्बन बिंधवाता है.
गर्म-गर्म लोहे से छाती छिंदवाता है ।

सारे ग़म पी-पीकर सावन बन जाता है ।
बंसी के कारण वृंदावन बन जाता है ।

साँय-साँय करता-सा, बाँसों का जंगल यह,
सासों का जंगल यह ।

◈

निंदिया के पाँव जले

भिनुसारा आग-आग,
पुरवाई बाग-बाग,
डोली में सिमट गया होली का सब सुहाग ।

सहमे-से पाँव-पाँव, नाप रहे गली-गाँव,
निमिया की फुनगी ने ओढ़ लिया काँव-काँव ।
जमुहाते अम्बुवा की
उलझी मंजरियों में
अँगड़ाई लेता है कोयलिया का विहाग ।

विस्मित एकाकीपन, सहमी-सहमी चितवन,
हाथों से द्वार थाम झाँक रहा मन-दरपन ।
छितराती अलकों ने,
बतियाती पलकों ने,
दो दिन से साधा है अनबोला वीतराग ।

धुँधियाते गाँव जले, बरगद की छाँव जले,
सपनों के सिरहाने निंदिया के पाँव जले ।
पतझर के पहले ही,
फागुन के मेले में,
भँवरों ने बाँट लिया उपवन का सब पराग ।

◈

खोजता है चाँद

खोजता है चाँद जाने क्या ?

मेघ की लट में छिपे श्रम के सितारे,
डाल पर झूले-टँगे शत एकतारे ।
ओस से भीगी हुई ये सजल रातें ।
सिसकियों का कफ़न ओढ़े तृषित आतें ।

शून्य नभ में पागलों-सा रात भर,
दो पलक की ओट में बरसात भर,
खोजता है चाँद जाने क्या ?

साँझ की लाली निशा की कोर से क्या ?
छीनने हँसती उषा को भोर से क्या ?
जा लगी डोंगी धरा के उस कँगारे,
खिर पड़े जलते हुए नभ के अँगारे ।

व्योमगंगा के किनारे रात भर
झिलमिलाते दीपकों की पाँत पर,
खोजता है चाँद जाने क्या ?

◈

रंगो के सिरहाने बैठी है धूप

महुआ से टपक रहे मदिरा के दल,
ठौर-ठौर महक रहे फागुन के फल ।

कली-कली बिखर गया भँवरे का प्यार,
खिड़की से लरज गई चंपा की डार ।
मानो संकेत किया, आज नहीं कल ।

होंठों में दहक रहे टेसू के फूल ।
चुंबन में सिमट रहे नदिया के कूल ।
गर्म साँस बोल रही, दूर कहीं चल !

बगिया में बौराया बूढ़ा-सा आम,
कोयल के साथ हुआ ख़ुद भी बदनाम ।
पतझर-सा फैल गया अम्बुवा का छल ।

झुरमुट से झाँक रही अलसाई छाँव,
कुछ दिन से भारी है मौसम के पाँव ।
जाने कब आजाए पीड़ा का पल ?

फूलों के झूलों में सौरभ के भूप ।
रंगो के सिरहाने बैठी हैं धूप ।
ओंठों पर लोरी औ पलकों में जल ।

◈

सूरज के पाँव

आई ऋतु क्वाँर की ।

सपनीली सन्ध्या में
निंदियाते गाँव ।
पछुआ की ओर मुड़े
सूरज के पाँव ।

भोर हुए सुध आई
अपने घर-द्वार की ।

भिनुसारा सतरंगी,
ऊषा चुपचाप ।
पूरब के कंधे पर
हल्दी के थाप ।

पियराए मोती-सी
फ़सल कटी ज्वार की ।

◈

नाच उठा चुनरी पर छपा हुआ मोर

देख-देख अलकों के बदराए छोर,
नाच उठा चुनरी पर छपा हुआ मोर ।

अलसाया सूनापन
पछुआ की शय्या पर,
विस्मय की भीड़ लगी
पथ की पुरवैया पर ।
किरण-किरण आँज गई आँखों के कोर ।

अर्थहीन लहरों पर
बुदबुद-से बसे गाँव ।
शबनम अभिलाषा-सी
खेल रही धूप-छाँव ।
बरगद में उलझ गया स्मृतियों का शोर ।

डाल-डाल अवमूल्यन,
पात-पात पतझर है ।
स्वीकृत समझौते-सा
बौराया निर्झर है ।
संचय के सिरहाने बैठ गया चोर ।

◈

अलसी का अलसाया पोर-पोर

चंदा की चिड़िया ने
किरणों के तिनकों से
घोंसला बनाया जामुनिया की डाली पर

कोयलिया बहक गई निमिया के गाँव-गाँव,
पायलिया चहक गई छिमिया के पाँव-पाँव ।
खेत के सिवाने पर, गली के मुहाने पर,
झूठी अफ़वाहों-सा फैल गया काँव-काँव ।

अम्बुआ के झुरमुट में बतियाते बरगद ने
हलकी-सी गाली दी दुनिया की ताली पर ।

शरमीली सरसों का पियराया छोर-छोर,
निंदियाती अलसी का अलसाया पोर-पोर ।
गदराई रातों में, कजरारी आँखों में,
माला के मनके सब बिखर गए ठौर-ठौर ।

कथियाए हाथों पर, मिसियाए दाँतों पर
पनवाड़ी बहक गया चुनिया की लाली पर ।

◈

बादल बह गया है

आँख में जब भी रुकी मुस्कान,
काजल बह गया है ।

पाँव के गुमसुम महावर में छिपी
बदनाम धड़कन ।
अँगुलियों में लिपटती संकेत की
बेलाग थिरकन ।
गगन में जब भी उगा नक्षत्र,
बादल बह गया है ।

वादियों का मौन खरगोशी हवा के –
गाँव बोला ।
विरहिणी के नीम पर हिचकी टँगी,
फिर काँव बोला ।
वक्ष में जब भी उठा संकोच,
आँचल बह गया है ।

◈

भाग रही पूरब से रात

सूरज की जहाँ चली बात,
ऊषा का लाल हुआ गात ।
मोती को आँचल में बाँध,
भाग रही पूरब से रात

बहुरूपी तारों का चोर,
रजनी का बेटा मुँहजोर ।
पश्चिम में दुबका, फिर भी–
दीख रही कटी हुई कोर ।

फूलों के झूलों में बन्द
सोते हैं भोले मकरंद
आए हैं खुशबू के द्वार,
तितली की लोरी के छन्द ।

भँवरों की पिघल गई हूक,
सुलग गई कोयल की कूक ।
पूरब के सीने में कैद,
किरणों की बातें दो टूक ।

मेरी इन पलकों के पार,
बैठा है तम का परिवार ।
दूर करूँ दिन को, पर शाम
लौट-लौट आता हर बार ।

◈

ऋतु को रोमांच हुआ

सतरंगी घूँघट में दृश्यों की होड़,
चुम्बन को थाम लिया दर्पण को छोड़ ।

सुधियों के पनघट पर
बुदबुद की भीड़
बरगद के घर पहुँचा
बनवासी चीड़ ।
अचरज की घाटी में संशय की दौड़ ।

दुविधा के अलगौंजे
शंका के ढोल ।
जिज्ञासा आँक रही
सरगम का मोल
ऋतु को रोमांच हुआ सिमाएँ तोड़ ।

कंदिल-सी सुलग गई
पूरब की आँख ।
अपयश-सी फैल गई
पतझर की पाँख ।
चिन्ता में डूबा पगडंडी का मोड़ ।

◈

गर्भवती छाँव

अपशकुनी परिचय का पाँव,
विस्मय का उजड़ गया गाँव ।

सुरमई हवाओं में सुधियों के गीत,
तट पर रोमांचित है अलसाया शीत ।
कटुता की फुनगी पर बैठ गया काँव ।

धुँधियाती यादों के कंधों पर कौन ?
प्रश्नों की साँकल पर लटक गया मौन ।
उबकाई लेती है गर्भवती छाँव ।

पछुआते संशय में डूब गई साँझ,
शंका के पनघट पर बतियाती बाँझ ।
कुण्ठा की महरी को और नहीं ठाँव

◈

सुधियों के गाँव

घुटे-घुटे परिचय का जहरीला दंश,
हरी नागफनियों का निगल गया वंश ।

स्मृतियों के चौखट पर
अलसाया द्वार ।
गुमसुम एकाकीपन
खोलता किवाँर ।
विभ्रम की लहरों पर बिखर गया हंस ।

शैवाली बाँहों के
भागते त्रिकोण ।
विस्मय के चेहरे पर
सिमट गया मौन ।
उखड़ गया स्वागत का सपनीला अंश ।

चिन्तन के तट पर है
सुधियों के गाँव ।
मंजिल की डाली पर
गदराए पाँव ।
सिहरन-सा गोकुल पर फैल गया कंस ।

◈

दरक गया पोखर-सा मन

सुलग गई अम्बर की आँख,
झुलस गए धरती के पाँव ।
दरक गया पोखर-सा मन,
सिमट गई बरगद की छाँव ।

लू पहन के चल रहीं हवाएँ जोर-जोर से,
सिमट रहीं, लिपट रहीं लताएँ छोर-छोर से ।

तपता है वैरागी मन,
जलते हैं संन्यासी खेत ।
निंदियाती नदिया के पास
उड़ती है सपनों की रेत ।

कहकहे लगा रहे बबूल जोर-जोर से,
सिर उठा के देखते खजूर गोर-गोर से ।

पंखों में चोंच दिए मौन,
दुबके हैं कलरव के तार ।
यहाँ-वहाँ भटक रहा हाय,
पत्तों का सूखा संसार ।

स्वेद बूँद थरथरा रही है ठौर-ठौर से,
मोम से पिघल रहे हैं प्राण पोर-पोर से ।

◈

स्वस्थ शिशु की आँख-सा आकाश

आ गए दिन गरम,
ठण्डी रात ।
चुक गए बादल,
रुकी बरसात ।
स्वस्थ शिशु की आँख-सा आकाश,
नववधू की लाज-भीगा प्रात ।

कट गए हैं खेत,
रोता धान,
धान पहुँचा,
दौड़कर खलिहान ।
उड़ रहा भूसा, बरसता स्वर्ण,
टोकरी से झर रहा वरदान ।

रात ज्यों बिखरे
किसी के केश ।
केश जिनमें
चमकता राकेश ।
घूमता मन पूर्णिमा के साथ,
पहनकर स्वर-लहरियों का वेश ।
लिप गए आँगन,
पुती दीवार ।
माँडनों से भर गए
घर-द्वार ।

नज़र के दीपक जले सब ओर,
आ गए मेहमान बन त्योहार ।

सौ बरस के गूँजते,
संकल्प ।
इस बहाने,
बीत जाते कल्प ।
पी रहे सब शरद का उल्लास,
काल जैसे रुक गया हो स्वल्प ।

◈

खलिहानों पर यौवन हुआ सवार

तितलियाँ क्या बहकीं !
फूलों पर जैसे हुई मूठ की मार,
तितलियाँ क्या बहकीं !

टेसू दहक उठे पिछवाड़े, गिरी निबौरी आँगन.
दरवाजे पर केसर ओढ़े होली हुई सुहागन ।
कलियों के सीने में आया जैसे नया उभार
पँखुरियाँ क्या महकीं !
पुरवैया आई कर सोलह शृंगार ।
तितलियाँ क्या बहकीं !

गली-गली अल्हड़ तरुणाई, घर-घर में पहुँनाई ।
बौराए अम्बुवा-जम्बुवा पर कूक रही शहनाई ।
खेत बुढ़ाए, खलिहानों पर यौवन हुआ सवार ।
गुजरिया क्या चहकीं !
गोरस की मटकी लेकर चली बजार ।
तितलियाँ क्या बहकी !

कायाकल्प हुआ उपवन का, झरे पुराने बंधन ।
बासन्ती अभिनंदन में खो गए हृदय के स्पन्दन ।
सीता मानो जयमाला ले खड़ी राम के द्वार ।
कोयलिया क्या टहुकी !
प्राणों में जागा एक नया संसार ।

◈

माँग जली टेसू की

बेमौसम कैसी बरसात ?

झरती है ठण्ड सर्र्
पत्तों के साथ ।
बुढ़ियाए मौसम के
काँप रहे हाथ ।
उबले दिन, उजली है रात ।

डाल-डाल लटका है
उन्मन एकान्त ।
अरहर की हरहर में
डूबा सीमान्त ।
पिपराया पीपल का गात ।

छिमिया की मुनिया ने
खोल दिये द्वार ।
गिरती खलिहानों से
गेहूँ की धार ।
तिलहन की आई बारात ।

सेमल पर लटक गई
शिशु की मुसकान ।
माँग जली टेसू की
जैसे दिनमान ।

◈

कनखी से होती है बात ।

निमिया पर प्रसव पीर
महुए पर गंध,
अम्बुवा पर झाँक रहे
मीठे अनुबंध ।
स्मृतियों की आई सौगात ।

◈

महकते बादल गगन की डाल पर

दूर पश्चिम में कहीं जलता शिखर,
लौट आते घोंसलों में पंख-स्वर ।
मुँह गड़ाकर दूध पीता बालपन,
तृप्त ममता पलक पर आती उतर,

बादलों की ओट में सोती किरण,
धूप की परछाइयाँ होती हिरण ।
चंदनी तट पर खड़ी खामोशियाँ,
चाँदनी के दूध से धोती चरण ।

महकते बादल गगन की डाल पर,
कुमुदनी हँसती खड़ी सैवाल पर ।
मैं निरे पाषाण का आलेख बन,
जड़ गया इतिहास की परसाल पर ।

◈

बूँद क्या टपकी

वह उठी बदली क्षितिज के गाँव से !
रौंदती आकाश
अपने पाँव से ।

बूँद क्या टपकी, सिहर कर रह गई ।
छन्न से तड़पी,
बिखर कर रह गई ।
हाय, कब तक सी सकेंगे प्यार से ।
घाव अपने –
बिजलियों के तार से ?

गरजते बादल सिसकता है गगन,
रात काली,
चल रहा सन्सन् पवन ।

थामकर अपना कलेजा चुप रहें ?
आह, अपनी पीर
हम किससे कहें ?

◈

फूल चंपा के

फूल हैं चम्पा के सुकुमार,
धूप में गुथे हुए ज्यों हार,

चन्द्र पर मुस्काता है स्वर्ण,
चाँदनी में यौवन का वर्ण ।

ठिठुरता अंग-अंग अभिराम,
झुलसता मन का पूर्ण विराम ।

द्वार के भीतर गया प्रभात,
द्वार पर खड़ी चाँदनी रात ।

हाय, परदेसी देकर पीर,
लगे तुम किस नदिया के तीर ।

पात-पात नूतन अनुबंध

किंशुक का रंग लिए,
अंग में उमंग लिए,
उपवन में आया मधुमास ।

पँखुरी का प्याला है,
परिमल की हाला है,
भँवरों की बुझी आज प्यास ।

ठौर-ठौर टोली है,
आँख में ठिठौली है,
टूट गए सीमा के बंध ।

अम्बुवा की हूक जगी,
कोयल की कूक जगी,
पात-पात नूतन अनुबंध ।

पतझर की मारी मैं,
अपने से हारी मैं,
सूनी है जीवन की डाल ।

प्रियतम परदेश गए,
कितने संदेश गए,
सूख रही मेरी वरमाल ।

◈

मीठा दर्द सीकर आ गई है ठण्ड

आ गई है ठण्ड !

कँपकँपी ओढ़े हुए दिन,
और ठिठुरन में सिमटकर थरथराती रात,
केसर साँझ, सोना प्रात,
मीठा दर्द सीकर आ गई है ठण्ड ।

शब्द सारे भाप बनकर
पेड़-पौधों को क्षितिज का दे रहे हैं रूप ।
क्वांरी गंध, कच्ची धूप,
अल्हड़ ओस पीकर आ गई है ठण्ड ।

ढाँककर आँचल सलौना
दूध फसलों को पिलाती है हमेशा कौन ?
धरती मौन, अम्बर मौन,
मेरा प्रश्न जीकर आ गई है ठण्ड ।

◈

नीम के पत्ते

पुराने छंद बनकर जा रहे हैं
नीम के पत्ते ।
नए सम्बन्ध बनकर आ रहे हैं
नीम के पत्ते ।

गए थे गाँव में सदेश देने
एक बिरहन को ।
तभी से काँव बनकर गा रहे हैं
नीम के पत्ते ।

इधर ये पाँख बनकर झर रहे
बेहोश पंछी-से,
उधर वे आँख बन मुस्का रहे हैं
नीम के पत्ते ।

भरी दोपहर लू के साथ
करवत हाथ में लेकर
समय को काटते ही जा रहे हैं
नीम के पत्ते ।

धरा को रूप देते हैं,
गगन को रंग देते हैं,
हवा को गंध से महका रहे हैं
नीम के पत्ते ।

◈

पत्ते हैं तीन-तीन ढाक के

पत्ते हैं तीन-तीन ढाक के,
गंधहीन पुष्प खिले आक के ।

अलसाई दोपहरी बरगद से पीठ टिका
बीन रही धूप-छाँव,
खा रही उबासियाँ
फूहड़ लू पियराए पत्तों के कहने पर
अंकुर की कोंपल की
ले रही तलाशियाँ ।
प्यास लगे दिन बहुरे चाक के ।

थूहर रोमांचित-सी भोग रही गीलापन,
गाँव के सिवाने तक
सटक गया सूखा वन ।
कुटज के करीलों के घर आए बनपाँखी,
दरक गया अश्रुताल,
हरख गया रूखापन ।
गीत सिके कोयल के, काक के ।

◈

तुम कछार पर ठिठक गए उधर

तुम पठार पर ठिठक गए उधर,
इधर धूप
गलियारा पार कर गई ।

तितली के पंखों को मत चितरो !
पलकों की तूली में छंद घोल
आँसू की परिभाषा गढ़ो कभी ।
शाम-सुबह पिहकाओ बंसी मत !
राधा की बेबस लाचारी की
बूँद-बूँद अभिलाषा पढ़ो कभी ।
    तुम कछार पर ठिठक गए उधर,
    इधर मीन
    जलधारा पार कर गई ।

धनिया की छत टपकी सावन-भर
पीपल की नस-नस उग आई है
होरी के हाथ और पाँवों में ।
कोलाहल लील रहा गीतों को
बेशर्मी झाँक रही गलियों से
सन्नाटा पसर रहा गाँवों में
    तुम मल्हार पर ठिठक गए उधर,
    इधर साँस
    इकतारा पार कर गई ।

◈

शायद मुख चूमा है....

चंदा की छाँव पड़ी
सागर के मन में
शायद मुख देखा है तुमने दरपन में ।

अधरों के ओर-छोर टेसू का पहरा,
आँखों में बदरी का
रंग हुआ गहरा ।
चुम्बन-से डोल रहे
माधव मधुबन में,
शायद मुख चूमा है तुमने बचपन में ।

अँगड़ाई लील गई आँखों के तारे,
अँगिया के बंध खुले
बगिया के द्वारे
केसरिया गीलापन
वन में उपवन में,
शायद मुख धोया है तुमने जल-कण में ।

◈

कुहरे में डूब गया गाँव का सवेरा

गात-गात ठिठुरन है,
पात-पात सिहरन है,
दूब के सिवाने पर शबनम का डेरा है ।
मुँह देखा अगहन ने
पोखर के दरपन में
कुहरे में डूब गया गाँव का सवेरा है ।

दोहर में, चादर में,
ऊनी उपवस्त्रों में,
सिमटा है, सिकुड़ा है पूरा ही जन-जीवन ।
घर से चौबारे तक,
चौखट से पनघट तक,
धब्बों-सा रेंग रहा अलसाया उन्मन मन ।

किरणों ने केसर क्या
छिड़की वन-उपवन में,
महक उठा जड़-चेतन, चहक उठे पंछी स्वर ।
कुनमुन-सी धूप ओढ़
चंचल मृगछौने ने
दौड़ जो लगाई तो पुलक उठी लहर-लहर ।

कच्ची नम साँसों-सी
हेमन्ती शीत लहर
चीर-चीर देती है प्राणों तक हाड़-मांस ।

रात-रात बतियाता
साँस-साँस अँधियारा,
पहरे पर बैठकर अलावों के आसपास ।

तारों की सीढ़ी से
उतर रही ओस बूँद
ओस बूँद कुतर रही हरी-भरी पाँखों को ।
बड़े भोर सहमे-से
सूरज ने सहलाया
फूलों की कलियों की भरी-भरी आँखों को ।

◈

खुशबू के हस्ताक्षर

मिट्टी भी हँसती है, ऐसा सुनकर मैं हँसता था पहले,
फूलों का परिवार देखकर अब विश्वास हुआ है मुझको ।

कितनी कलियों की आँखों में
गूँज रही खुशबू की गीता !
कितने फूलों के होंठों पर
लिखी हुई रंगों की कविता !
पँखुरी-पँखुरी फैल गई है अलबेली शरमीली शबनम,
मानो रंगों की छाया में
तैर रही आँसू की सरिता ।
औरत के भी दिल होता है, सुनकर मैं हँसता था पहले,
कलियों की मनुहार देखकर अब विश्वास हुआ है मुझको ।

खुशबू के हस्ताक्षर करती
डोल रहीं तितली बालाएँ ।
सोनजुही के कानों में कुछ
कहती भँवरों की मालाएँ ।
वासन्ती घूँघट के भीतर छिपे हुए हैं मधु के प्याले,
मानो रेशम की बस्ती में
खुली पड़ी हों मधुशालाएँ ।
तितली नगरवधू बनती है, सुनकर मैं हँसता था पहले,
रंगों का व्यापार देखकर अब विश्वास हुआ है मुझको ।

खुशियों की इस महफ़िल में भी
एक कली की आँखें पुरनम ।
हाय, कहीं परदेश गया है
उस भोली का निष्ठुर प्रियतम ।
पत्तों के सिरहाने बैठी थरथर काँप रही बेचारी,
मानो वीणा के तारों पर
सिसक रही हो कोई सरगम ।
प्रियतम सब छलिया होते हैं, सुनकर मैं हँसता था पहले,
भँवरों का व्यवहार देखकर अब विश्वास हुआ है मुझको ।

◈

बड़ी थी उन दिनों हममें खराबी

ज़रा-सी बात पर हँसना-हँसाना,
ज़रा-सी बात पर रोना-रुलाना ।
मचलना, रूठना फिर मान जाना,
हृदय को आँख से पहचान जाना ।
जवाबी झिड़कियाँ थीं, सिसकियाँ थीं,
बड़े आँसू, गुलाबी हिचकियाँ थीं ।
बड़ी थी उन दिनों हममें खराबी,
प्रतीक्षा कर नहीं सकते ज़रा भी ।
उतावल और उत्सुकता पलक पर,
रहस्यों का सभी चिट्ठा हलक पर ।
दुराग्रह था, मगर कितना भला था,
शहद में और मिश्री में पला था ।
हमारी एक दुनिया थी निराली,
जहाँ हर रोज़ थी होली-दिवाली ।
बड़ी थी उन दिनों हममें खराबी,
नहीं कुछ गुप्त रख सकते ज़रा भी ।
घृणा थी, किन्तु कितना स्वाद उसमें,
दिया था दूध-घी का खाद उसमें ।
नहीं भगवान या ईमान कोई,
नहीं शैतान या हैवान कोई ।
मचलना और रोना साधना थी,
थिरकना नाचना आराधना थी ।
बड़ी थी उन दिनों हममें खराबी,
नहीं शंका किसी पर थी ज़रा भी ।

◈

गगन के चू पड़े मोती

धरा को देखकर रोती,
गगन के चू पड़े मोती ।

चकोरी थकित बाँहों से
लगाए आस सावन की ।
पपीहा नत निगाहों से जगाए प्यास जीवन की ।
किसी की प्रणय-राहों में
पलक के पाँवड़े गीले ।
विरह की सर्द आहों से सुखों के शर पड़े ढीले ।
शलभ-गण आ गए होते
शमा गर जल रही होती ।

निशा के पार आशा-घन
बना सिंदूर सन्ध्या का ।
पलक के पालनों में जल रहा शव आज वंध्या का ।
दु:खों की कालिमा राका
बनी नभ में उतर आई ।
नदी के करुण कल-कल ने विरह की रागिनी गाई ।
तभी राकेश मुस्काए,
जहाँ पर थी अमां सोती ।

दिशा ने रात-भर दीपक
जलाए आस में जिसकी ।
उषा को देख शबनम ने भरी निश्वास की सिसकी ।

दृगों के मौन कूलों से
चली जो प्यार की सरिता,
अधर के द्वार पर आ वह बनी संसार की कविता ।
हृदय की मधुर वीणा काश.
टूटे तार की होती !

◈

२६२८०२

अरे माझी !

धरा के पाँव जलते हैं,
गगन की आँख जलती है,
पँखेरू तड़पते असहाय, उनकी पाँख जलती है ।

गरम लू के थपेड़ों ने,
उजाड़े पनघटी सपने ।
हमारा भाग्य क्या रूठा, यहाँ रूठे सभी अपने ।

हृदय की ज्वाल कम थी,
जो यहाँ भूचाल ले आए ?
बरसता स्वेद ले आए, तरसता ताल ले आए,

कटेगी रात तारों में,
कटेंगे दिन अँगारों में ।
अरे माझी ! हमारी नाव डूबी है कगारों में ।

◈

सो गए ये गाँव

सो गए ये गाँव कुहरा ओढ़कर
सब सो गए ।
राह भूले आरती के स्वर
रुपहरे हो गए ।

दूर मंदिर के शिखर पर मोर बोला –
मैं यहाँ हूँ ।
नीम पर काला-कलूटा शोर बोला –
मैं कहाँ हूँ ?
कुछ धुएँ के बीज नभ के बीच
उजले हो गए ।

बादलों के चूर्ण से सूरत ढँकी
जुड़वाँ फलों की ।
भींगती जातीं मसें उठते हुए
दूर्वा दलों की ।
पलक से पानी गिरा, सब फलक
धुँधले हो गए ।

◈

आँख की छत

याद आई तुम्हारी प्रथम मेघ-सी,
आँख की छत टपकती रही रात-भर ।

इस रुमाली गगन के खुले छोर पर
इन्द्रधनुषी कसीदा तुम्हीं ने किया ।
बिजलियों के नए तार लेकर उधर,
बादलों का कलेजा तुम्हीं ने सिया ।

नींद के द्वार पर स्वप्न आए मगर,
क्रूर पलकें झपकती रहीं रात-भर ।

जेठ के घर बसी लू कुँवारी रही,
किन्तु पछुवा की बेटी सुहागन बनी ।
कोकिला छिप गई आम की ओट में,
कूक उसकी मगर स्याह नागन बनी ।

दूध-घी से बनी चाँद की कोर पर,
एक बदली लपकती रही रात-भर ।

आज कजरी के सीने से चुनरी उड़ी,
स्वप्न जुड़वाँ वहीं झाँकते रह गए ।
आज आल्हा के पिछवाड़े खिड़की खुली,
सेज के पहरुए ताकते रह गए ।
वक़्त ने लौरियाँ भी सुनाईं, मगर –
उम्र बैठी सिसकती रही रात-भर ।

◈

दूधिया प्रात

तुम न आईं, मगर याद आई यहाँ,
ओढ़कर अश्रुभीगी हरी चुनरिया ।
बदरियों-सी उठी, गेसुओं-सी घिरी,
बिजलियों-सी तुम्हारी गिरी नज़रिया ।

रातभर मय पिया, सो गया फिर सुबह,
राह में ओढ़कर कालिमा की कथा ।
जो अकेले हैं वे अब करें भी तो क्या ?
आह भरना तो है अब पुरानी प्रथा ।

तुम न सोईं, मगर सो गई चाँदनी,
तब उठी, जब उठी गाँव की गुजरिया ।

टँग गया दूधिया प्रात खपरैल पर,
बेल फैली उषा की तो सूरज फला ।
धूप के बीज ऐसे पके तो पके,
जिसने खाए उसी का कलेजा जला ।

तुम न बदलीं, मगर स्याह बदली घिरी,
बदरिया के बहाने उड़ी चदरिया ।

अव न तरसाओ तुम, थोड़ा बरसाओ तुम,
ज़िन्दगी की बगल में खड़ा प्यार है ।
फिक्र है बस तुम्हारी, मुझे तो यहाँ,
अब तुम्हारी ही यादों का आधार है ।

तुम न बोलीं, मगर डालियाँ झुक गईं,
खा गई बल किसी की झुकी कमरिया ।

◈

तुम बरसते रहे

तुम चटकते रहे फूल की गोद में,
मैं खटकता रहा शूल के पाँव में ।

ले गए भूल से दिल का छोटा दिया,
क्यों न बुझने से पहले ही लौटा दिया ?
तुम जले थे जिलाने, जलाने लगे,
प्यार के नाम पर यह मुखौटा दिया ।

तुम चहकते रहे इष्ट के ताल पर,
मैं बहकता रहा कष्ट की नाव में ।

दो भरम ले करोड़ों वहम दे दिए,
नींद के पहरुए बेरहम दे दिए ।
सारे ग़म को भुलाने दी वीणा तुम्हें,
तुमने वीणा को ही सारेगम दे दिए ।

तुम किलकते रहे जोत की धूप में,
मैं विलखता रहा मौत की छाँव में ।

सिद्धियों का लगा सामने जाल है,
मेरे मन का महाजन तो कंगाल है ।
मेरी पीड़ा के आँसू को फाँसी लगी,
मेरे तन का वतन हाय, कंकाल है ।

तुम बरसते रहे आस के फूल पर,
मैं तरसता रहा पास के गाँव में ।

◈

डूबते शहर, डूबते गाँव

रात की मादक मत्त बयार,
खोलती मन के मुँदे किंवार ।

नयन में बसती स्वप्न-सुगंध,
वक्ष पर उगते दो सम्बन्ध ।

कसकते अंग, सिमटती लाज,
डूबता माझी सहित जहाज ।

उभरती रजनीगंधा पीर,
जकड़ती साँसों की जंजीर ।

फूटता ज्वालामुखी चटाख,
सरकता लावा तोड़ सुराख ।

गरम सोते में घुलती देह,
लपट को ओढ़ भीगता मेह ।

डूबते शहर, डूबते गाँव,
डूबती कूक, डूबते काँव ।

एक मैं खड़ा देखता मौन,
कहाँ हूँ, किधर और हूँ कौन ?

◈

आज पनघट हर अधर के पास आया

खोल दो अवरुद्ध मन की अर्गलाएँ,
द्वार पर देखो, अरे ! मधुमास आया ।

ऐ प्रणय के पथिक, कुछ तो गुनगुना रे !
आ गईं सब गोपियाँ यमुना किनारे ।
आह, जीवन के तिमिर में राह तकते,
आँख की राहों बहे कितने पनारे ?

अश्रुकण अब फिर छिपा लो बादलों में,
आज नभ में स्वाति का आभास आया ।

युग बिताए गरल के दरम्यान जीते,
अश्रु-धागों से अधर के गान सीते ।
रिस गई सारे सुखों की लालिमा भी,
बच गए कंकाल के घट शुष्क-रीते ।

घट तुम्हारी प्यास अब घटने न पाये,
आज पनघट हर अधर के पास आया ।

घोर तम ने चाँदनी गुमराह कर दी,
और धरती ने पहनली स्याह वर दी ।
ज़िन्दगी ने आसमां में कुछ टटोला,
कुछ चकोरों ने बरफ-सी आह भरदी ।

ओ किनारो, लहर के बन्धन छुड़ा लो,
आज पूनम का नया उल्लास आया ।

सीखचों में घुट गया दिन का उजाला,
खुल न पाया हृदय का यह वज्र ताला ।
आँख की सब रोशनी दिन में जला दी,
रात को आया न आया आँख वाला ?

चिक उठा दो आज मेरी कल्पना के,
राह से मिलने स्वयं रनवास आया ।

◈

मिट्टी का कर्ज

शोणित खारा, सागर खारा,
आँसू और पसीना खारा ।
चार दिनों की सुख-सरिता में कितना नमक बहाया हमने ?

मिट्टी का सारांश सरकता
लावा बनकर इंसानों में ।
वीर बहूटी बाँट रही ज्यों कतरा-कतरा मयखानों में ।
मिट्टी का यह कर्ज़ चुकाते रहे
सदा मिट्टी के पुतले ।
और ब्याज में सिर दे देते मरघट जैसे मैदानों में ।
चौवा लेकर, चंदन लेकर,
प्राणों का अभिनंदन लेकर,
धरती के सूने माथे पर कितना तिलक लगाया हमने !

हिम-खण्डों में लिपट-लिपटकर,
सिसक रही जल की दुहिताएँ ।
माँ धरती की पीड़ा लेकर सागर तक जाती सरिताएँ ।
कंकर-कंकर छंद पहनकर,
घुले जा रहे श्रम-गंगा में ।
धरती के कागज पर मानो लिखी हुई मनु की कविताएँ ।
नदियाँ नाचीं, सदियाँ नाचीं,
कण-कण की हर सुधियाँ नाचीं,
कुटिया से महलों तक फैला कितना फर्क मिटाया हमने !

औस कणों में उषा रो रही,
तारों में रोतीं सन्ध्याएँ ।
कण-कण के तट पर मुँह ढँककर रात-रात रोती राधाएँ ।
गलियाँ रोतीं, कलियाँ रोतीं ।
कलियों की पंखुरियाँ रोतीं ।
पलकों के सूने पलने को देख-देख रोतीं वन्ध्याएँ
धरती जागी, अम्बर जागा,
मौसम ओढ़ दिगम्बर जागा ।
मुट्ठी-भर सपनों के खातिर कितना अलख जगाया हमने !

◈

अब कुछ मन करता है

अब तक लिखता रहा वही सब जो कुछ मन करता है,
मन के बारे में लिखने को अब कुछ मन करता है ।

मन ही पथ है, मन ही रथ है, मन ही रथ की गति है,
दृश्य जगत का एक-एक कण मन की ही अनुकृति है ।

फ़र्क़ नहीं तुम फूल उगाओ या काँटों की क्यारी,
फ़र्क़ यही है उसके पीछे कैसी दृष्टि तुम्हारी ।

गर काँटे का जीवन फूलों की रक्षा में बीते,
तो क्या फ़र्क़ पड़े फूलों से वह हारे या जीते ।

फ़र्क़ देह का नहीं, फ़र्क़ मन के दर्पण का भाई !
फ़र्क़ फूल का नहीं, फ़र्क़ उसके अर्पण का भाई !

फ़र्क़ नहीं पड़ता मंदिर के भीतर कौन जड़ा है,
फ़र्क़ बड़ा पड़ता मूरत के सम्मुख कौन खड़ा है ।

देह वही नारी की, लेकिन समय-समय की बातें,
कभी हलाहल की प्याली तो कभी अमिय बरसातें ।

स्तन तो स्वर्ण कुंभ हैं या फिर भरे सुरा के प्याले,
जिन्हें देखकर हुए आज तक सभी पुरुष मतवाले ।

लेकिन शिशु को देख स्तनों में जहर नहीं रहता है,
स्नेह दूध की धारा बनकर बूँज-बूँद बहता है ।

देह कीमती नहीं, कीमती उसमें बैठा मन है,
मन ही है दुस्तर वैतरणी, मन ही नन्दनवन है ।

मन मथुरा-काबा है, मन में मूरत छिपी हुई है ,
जिसे ढूँढ़ते बाहर उसकी सूरत छिपी हुई है ।

मैं कब कहता, मन को मारो या उसको घुड़काओ,
मैं तो कहता, उसे मित्र-सा हँसकर गले लगाओ ।

सुबह-शाम एकान्त देखकर बात करो कुछ मन से –
भाई तुझे मिला है कुछ सुख मेरे इस जीवन से ?

तुझे तुष्ट करने में साथी ! मेरा जीवन बीता,
लेकिन तू तो बस वैसा ही है रीता का रीता ।

उम्र एक सरिता है जिसमें सब कुछ बह जाता है,
जिसकी अंजुरि छोटी-सी, वह प्यासा रह जाता है ।

समय बहुत कम रहा दोस्त ! अब कैसे तुझे रिझाऊँ ?
आ, मैं गले लगाकर तुझको अपनी प्यास बुझाऊँ ।

सदा देखता रहूँ उसे मैं जो कुछ मन करता है,
शायद इससे काम बने कुछ, ऐसा मन करता है ।

◈

देना हो तो दो मुझको पूरी परिभाषा

देना हो तो दो मुझको पूरी मधुशाला,
इस हाला से कैसे प्यास बुझेगी मेरी ?

उखड़ा-उखड़ा मौसम रूठी पुरवाई भी,
पलकें हुईं उदास, ढह गई अँगड़ाई भी ।
कब तक कोई शोक मनाए इस नगरी में,
हिचकी लेकर मौन हो गई शहनाई भी ।

देना हो तो दो मुझको रेशम की फाँसी,
इस धागे से कैसे साँस रुकेगी मेरी ?

शैशव का उल्लास जगाया किलकारी में,
यौवन का उन्माद उगाया गुलक्यारी में ।
कौन पिलाए पौधों को ममता का पानी,
माली तो फिर नहीं गया उस फुलवारी में ।

देना हो तो दो मुझको पूरा अवलंबन,
इस कंधे पर कैसे लाश उठेगी मेरी ?

पर फैलाकर वासन्ती परिवेश गया है,
डाल-डाल पर पतझर का आदेश गया है,
कैसे खिल पाएँगी इस उपवन की कलियाँ ?
सुनते हैं मधुमास अभी परदेश गया है ।

देना हो तो दो मुझको पूरा नन्दनवन,
इस बंजर में कैसे घास उगेगी मेरी ?

बिखर गए हैं सपनों के बंजारे बादल ।
सूख गई हैं आँखें, दरक गया है काजल ।

तट पर आकर अब उलीचते हो निश्वासें,
किस बर्तन से नाप रहे हो गंगा का जल ?

देना हो तो दो मुझको पूरी परिभाषा,
इन शब्दों से कैसे आस पुरेगी मेरी ?

सड़े-गले बाज़ार, रुग्ण जीवन की राहें,
चौराहे सब मौन खड़े फैलाकर बाँहें ।
गलियाँ हैं सुनसान भीड़ खो गई भीड़ में,
आम आदमी लुंज-पुंज ले रहा कराहें ।

देना हो तो दो मुझको सच्चा अनुशासन,
दु:शासन से कैसे रास थमेगी मेरी ?

◈

धूमिल साँझ

मैंने तो सोचा था चलकर
पा लूँगा मंजिल की सीमा ।
इतनी लम्बी राह कि थक कर चूर हो गया चलते-चलते ।

अपनी गली भली लगती थी
और भले थे सब नर-नारी ।
लेकिन चौराहे पर देखा—कई पंथ हैं, कई पुजारी ।
जिससे पूछो, वही बताता
जीवन की नूतन परिभाषा ।
शब्दों की छाया में जैसे-तैसे सारी उम्र गुज़ारी ।
मैंने तो सोचा था जलकर
पा लूँगा सूरज की किरणें ।
इतना निष्ठुर प्रात कि जग से दूर हो गया जलते-जलते ।

कितनी बूढ़ी साध हमारी,
किन्तु साधना बीते पल की ।
नन्ही चोंच डुबाकर लेते थाह महासागर के जल की ।
मरघट के सिरहाने बैठे
स्वप्न देखते हैं पनघट के ।
वर्षों का सामान जमा है, लेकिन ख़बर नहीं है पल की ।
मैंने तो सोचा था गलकर
पा लूँगा निर्झर का आँचल ।
इतनी काली रात कि मैं भी क्रूर हो गया गलते-गलते ।

उठा बालसूरज-सा मेरा हाथ
पूर्व के स्वर्ण-शिखर से ।
केसर से धुल गया अँधेरा, कंकर-कंकर गए निखर-से ।
लेकिन सन्ध्या ने मुसकाकर
कहा कान में कुछ पश्चिम के ।
टूट गए सब इन्द्रधनुष, तरकस के शर सब गए बिखर-से ।
मैंने तो सोचा था ढलकर
पा लूँगा विश्राम ज़रा-सा ।
इतनी धूमिल साँझ कि मैं भी धूल हो गया ढलते-ढलते ।

◈

हड्डियों को कुछ सुनहरा नाम दे दूँ

ज़िन्दगी की राह चलते थक गया हूँ,
साँस को कुछ मौत का विश्राम दे दूँ ।

मैं ज़रा भी राह का हामी नहीं था,
खूब भरमाया तुम्हीं ने दे सहारा ।
जब कभी भी कंटकों में डगमगाया,
आस-झाड़ू से तुम्हीं ने पथ बुहारा ।

डेढ़ गज मरघट ज़रा तुम साफ़ कर दो,
मैं कफ़न औ लकड़ियों के दाम दे दूँ ।

उम्र की कुछ चाह भी मुझको नहीं थी,
सुन नहीं पाया, किसे कहते जवानी ?
हाँ, रुदन की महफ़िलें तो बहुत देखीं,
आँख की मैं सुन चुका गीली कहानी ।

तुम हृदय की प्यालियाँ कुछ थाम लेना,
मैं अधर को आँसुओं के जाम दे दूँ ।

मौत ने कुछ कफ़न बाँटे बस्तियों में,
कुछ चिता से लकड़ियाँ मैं खींच लूँगा ।
ज़िन्दगी में मिल न पाई दोगज़ी भी,
आज कुछ लज्जा-वसन से तन ढकूँगा ।

तुम ज़रा-सा हृदय का शीशा दिखाना,
हड्डियों को कुछ सुनहरा नाम दे दूँ ।

सोचता हूँ, फिर चिता यदि जल न पाई,
दूर पहले सिसकते अरमान कर दूँ ।
मरघटों का शून्य आकर अधजला दिल–
छीन लेगा, इसलिए मैं दान कर दूँ ।

तुम ज़रा गंगाजली का मुँह झुकाना,
मैं सुबह के हाथ अपनी शाम दे दूँ ।

◈

चंदनी छंद

तन के तट पर मिले हम कई बार, पर–
द्वार मन का अभी तक खुला ही नहीं ।
डूब कर गल गए हैं हिमालय, मगर–
जल के सीने पै इक बुलबुला ही नहीं ।

ज़िन्दगी की बिछी सर्प-सी धार पर
अश्रु के साथ ही कहकहे बह गए ।
होंठ ऐसे सिए शर्म की डोर से,
बोल दो थे, मगर अनकहे रह गए ।

सैर करके चमन की मिला क्या हमें ?
रंग कलियों का अब तक घुला ही नहीं ।

चंदनी छंद बोकर निरे कागज़ी,
किसको कविता की खुशबू मिली आज तक ?
इस दुनिया की रंगीन गलियों तले,
बेवफ़ाई की बदबू मिली आज तक ।

लाख तारों के बदले भरी उम्र में,
मेरे मन का महाजन तुला ही नहीं ।

मरमरी जिस्म को गर्म साँसें मिलीं,
पर धड़कता हुआ दिल कहाँ खो गया ?
चाँद-सा चेहरा झिलमिलाया, मगर–
गाल का खुशनुमा तिल कहाँ खो गया ?

आँख की राह सावन बहे उम्र भर,
दाग़ चुनरी का अब तक धुला ही नहीं ।

◈

ज़िन्दगी से कफ़न सस्ते

तुम ज़रा अपने नयन के द्वार खोलो,
मैं सिसकते प्यार के दीदार कर लूँ ।

उफ, हृदय की वेदना को कौन जाने ?
बोल दो युग से कि दिल का मौन जाने ।
कौन-सा मौसम बिठाया सामने जो,
जी रहा या मर रहा, खुद को न जाने ।

तुम ज़रा मकरंद के बाजार खोलो,
मैं भँवर के तार को बेतार कर लूँ ।

आज मानव अश्रु के कण पी रहा है,
शीर्ण तन मरहम लगाकर सी रहा है ।
क्या बताएँ, रोटियाँ भगवान हैं अब,
भाइयों की बोटियों पर जी रहा है ।

तुम ज़रा विश्वास के कण तो बिखेरो,
मैं चहक का सामने संसार कर लूँ ।

भर गया है आँसुओं का ताल मानो,
ज़िन्दगी अब बन गई बेताल मानो ।
सभ्यता की हो गई अब मौत सुन लो,
अश्रु के बाजार में हड़ताल मानो ।

तुम ज़रा युगबोध की कुछ चाबियाँ दो,
मैं अभी हर द्वार को हरिद्वार कर लूँ ।

आज फुरसत है किसे जो राम बोले,
हर अधर पर बेबसी का जाम बोले ।

भावना के कुंज में पतझर बसा, फिर–
गोपियाँ आएँ तो कोई श्याम बोले ।

तुम ज़रा यमुना किनारे बीन ले लो,
मैं अभी अंगार का शृंगार कर लूँ ।

साँस लेते इन शवों पर सपन हँसते,
आज जीवन से कहीं ये कफ़न सस्ते ।
और देखो, लोथड़ों की बस्तियाँ ये !
उफ् दिलों के शहर में तो दफ़न बसते ।

तुम ज़रा जलधार को तैयार कर लो,
मैं अभी मल्हार को गलहार कर लूँ ।

◈

चरण-रेख

डगमग नौका जब-जब कूल-किनारा पाती,
खुशियों की हर लहर किनारा कर जाती है ।

मन की अभिलाषाएँ तो अब तलक कुमारी,
अनसोई सौभाग्य सेज-सी पलक हमारी ।
सपनों की वंध्याएँ पथ में बतियाती हैं –
आँखों के अनचाहे शिशु में झलक तुम्हारी ।

जब-जब चुम्बन अधरों पर घुटने चलते हैं,
घुटने टेक अधर रसधारा मर जाती है ।

स्वेद बूँद की पाँत भेद की बात खोलती,
प्राची की कूँची में किरण प्रभात घोलती ।
घूँघट की बूँदाबाँदी का अपना क्रम है,
मन की पीड़ा आँखों की बरसात तोलती ।

दोनों बाजू शहद बाँटती सरिताएँ, पर–
बेचारे सागर को खारा कर जाती हैं ।

अपने कंधों ढोता हूँ अधमरी लाश मैं,
चरण-रेख मिट गई कफ़न की ही तलाश में ।
चंदन जितना भाग्य बचा है कहाँ चिता का ?
मैं लेटा हूँ सौरभ खोए उस पलाश में ।

पर जब मन के चकमक से मरघट सुलगाता,
पनघट की मनुहार इशारा कर जाती है ।

◈

विद्रोही स्वर

मेरी पीड़ा की शहनाई खूब बजी,
लेकिन नक्कारों ने उसको नहीं सुना ।

चाहे सच अन्धा है, लेकिन मूक नहीं,
चुभता उसको जिसकी कोई चूक नहीं ।
लेकिन पतझर उस कोयल का कायल है,
जिसके प्राणों में पंचम की कूक नहीं ।
मेरी कोयल तो रोई मधरातों में,
लेकिन मक्कारों ने उसको नहीं सुना ।

सहने की सीमा का एक पड़ाव यहाँ,
फिर विद्रोही स्वर का तीव्र चढ़ाव यहाँ ।
क्रोधानल क्यों शान्त रहेगा भट्ठी में,
सिर पर आक्षेपों का चढ़ा कढ़ाव यहाँ ।

पिंजर में गोरैया गाती फाग रही,
लेकिन धिक्कारों ने उसको नहीं सुना ।

मेरा हिम-सा धैर्य कहाँ तक सहे किरण,
मर्यादा की लक्ष्मण-रेखा हुई हिरण ।
आज ज़िन्दगी ने सीखा है पाठ नया,
मरण तुल्य है गूँगा-बहरा-अंध शरण ।

मेरे शुक ने रामनाम का गीत पढ़ा,
लेकिन दुत्कारों ने उसको नहीं सुना ।

◈

कफ़न के पैबन्द

तुम ज़रा इन बादलों को बाँध रखना,
मैं गगन-पथ के फफोलों को गिना दूँ ।

ज़िन्दगी की राह सदियों से यही है,
साँस का अदना मुसाफ़िर भी यही है ।
उफ़्, हृदय की चादरें पैबंद वाली,
हाँ, कफ़न पर जीर्णता फिर भी नहीं है ।

तुम नयन के तार अधरों में पिरोना,
कफ़न के पैबंद में कुछ तो बना दूँ ।

अधर की मदिरा ज़माना पी गया, पर–
आँख के प्याले अभी तक रिस रहे हैं ।
उम्र की महफ़िल नहीं अब जम सकेगी,
ज़िन्दगी के साज़ दिन-दिन घिस रहे हैं ।

तुम ज़रा टूटे हृदय की बीन ले लो,
मैं स्वयं की मौत पर कुछ तो सुना दूँ ।

क्षितिज के उस पार शायद हो उजाला
पर गगन के छोर काले पड़ चुके हैं ।
तारकों की बस्तियाँ निर्जीव–सूनी,
चाँद के सब ओर छाले पड़ चुके हैं ।

तुम ज़रा अकाशगंगा में नहाना,
मैं वहीं पर आँसुओं का पुल चुना दूँ ।

ज़िन्दगी की फ़सल लादो गाड़ियों में,
मौत मुश्किल से मुझे ही ले सकी है ।
लकड़ियों के मोल कुछ तो बिक रहा है,
उम्र की मंडी मुझे क्या दे सकी है ?

तुम ज़रा मेरे कफ़न की गाँठ खोलो,
मैं चिता पर हृदय के छाले भुना दूँ ।

◈

खण्डहर में उल्लुओं की है सभा

लोथड़ों में दीखता बुझता दिया,
ख़ून से लथपथ सुलगता-सा हिया ।

आँख की पुतली, जहाँ सपना जड़ा,
नोंचते कौए जिसे चोंचें गड़ा ।

भोंकते हैं श्वान, रोते हैं सियार,
आँत बजती जब कभी चलती बयार ।

खेत का, खलिहान का मिटता निशान,
मेड़ पर बैठा सिसकता है किसान ।

खंडहर में उल्लुओं की है सभा,
द्वार पर ठिठकी हुई सूरज प्रभा ।

घूमता शैतान मनु के वेश में,
खून सस्ता देवता के देश में ।

मौत मरघट में बिछौना कर रही,
पीढ़ियों को हाय, बौना कर रही ।

ऐ, धरा से आदमी क्या खो गया ?
हाँ, प्रलय का समय शायद हो गया ।

मेरी दुनिया कहाँ छिपी है ?

पूछ रहे हो मुझसे, मेरी दुनिया कहाँ छिपी है ?
कैसे तुम्हें बताऊँ, मेरी दुनिया कहाँ छिपी है ।

वह दुनिया जिसकी पलकों से करुणा-जल बहता है,
सुख को, दुःख को, हास-रुदन को जो हर पल सहता है ।

जहाँ प्रेम की अनगढ़ गलियाँ रोज़ गले मिलती हैं,
जहाँ श्रेय की अढलक कलियाँ भोर तले खिलती हैं ।

जहाँ पसीना ही पौरुष का मापदंड बनता है,
जन-जन का विश्वास जहाँ पर राजदंड बनता है ।

कर्म जहाँ पर वर्ण व्यवस्था का करता निर्धारण,
नियम और कानून जहाँ पर जनता का उच्चारण ।

जहाँ बाग में मत्त मधुकरी गुनगुन-गुनगुन करती,
गाय-बैल के गले घंटियाँ टिनटिन-दुनदुन करतीं ।

अमराई में जहाँ कोकिला की पीड़ा घुलती है,
सावन में मन के मोरों की पाँख-पाँख खुलती है ।

जहाँ खेत में रंग-बिरंगी फ़सलें शरमाती हैं ,
मुखड़ा ज़रा दिखाकर फिर घूँघट में छिप जाती हैं ।

मेरी वह दुनिया, अलगौंजे जहाँ अधर पर रहते,
गीत घरों से चलकर आते गली-गली में बहते ।

मेरी दुनिया खेत और खलिहानों की दुनिया है,
मेरी दुनिया मीत और मेहमानों की दुनिया है ।

मेरी दुनिया गीत और गुणवानों की दुनिया है,
मेरी दुनिया प्रीत और परवानों की दुनिया है ।

बहुत चाहता हूँ, दुनिया को दूँ सच्ची परिभाषा,
ईश्वर जाने, पूरी होगी कब मेरी अभिलाषा ?

चाह नहीं है, रहूँ दूर मैं बादल की अलकों पर,
एक साध है, रहूँ हमेशा मानव की पलकों पर ।

पलकें उठी उठूँगा मैं भी, पलकें फिरी फिरूँगा,
आँसू जहाँ गिरेंगे, मैं भी उनके साथ गिरूँगा ।

पलकें झपकाने का सुख देवों के पास नहीं है,
पलकें गीली करने का उनको अभ्यास नहीं है ।

यह सब मिट्टी के पुतले का अपना प्यारा सुख है,
सुख-दुःख जो कुछ भी है, वह सब आँखों के सम्मुख है ।

मैं मानव की पलकों पर अब हरदम वास करूँगा,
उनके साथ जिऊँगा हरदम, उनके साथ मरूँगा,

पूछ रहे हो मुझसे, मेरी दुनिया कहाँ छिपी है,
आओ तुम्हें बताऊँ, मेरी दुनिया जहाँ छिपी है ।

◈

सुना है

सुना है चाँद ने
कुछ खाके ख़ुदकुशी कर ली
बड़े सवेरे
ओस जार-जार रोती है ।

उड़ा-उड़ा-सा रंग आज क्यों है पूरब का,
धुला-धुला-सा अंग आज क्यों है सौरभ का,
हवाभी खूँ के दाग़
बार-बार धोती हैं ।

जमेगी आँख में फ़सलें कहाँ से मोती की ?
समझ रहे हैं जिसे सब यहाँ बपौती की ।
लुटाती आठ-आठ
चार-चार बोती है ।

भला किया जो बिजलियों के तार ले आए,
कफ़न मिला तो उसको उधार ले आए,
बदलियों की लाज
तार-तार होती है ।

◈

तो तेरे साथ चलूँ

सुबह की एक किरण लूँ,
तो तेरे साथ चलूँ।
ज़रा-सी धूप पहन लूँ,
तो तेरे साथ चलूँ।

हमारी राह में काँटे सभी ने डाले हैं,
हमारे पाँव में कुछ बेजुबान छाले हैं,
चरण में एक चुभन लूँ,
तो तेरे साथ चलूँ।

घिसट रहा हूँ, गीत कैसे गुनगुनाऊँगा,
तुम्हारा गाँव बड़ी दूर है, थक जाऊँगा।
शहर में एक शरण लूँ,
तो तेरे साथ चलूँ।

◈◈◈